मैं बुद्ध बोल रहा हूँ

सं. अनीता गौड़

मैं बुद्ध बोल रहा हूँ

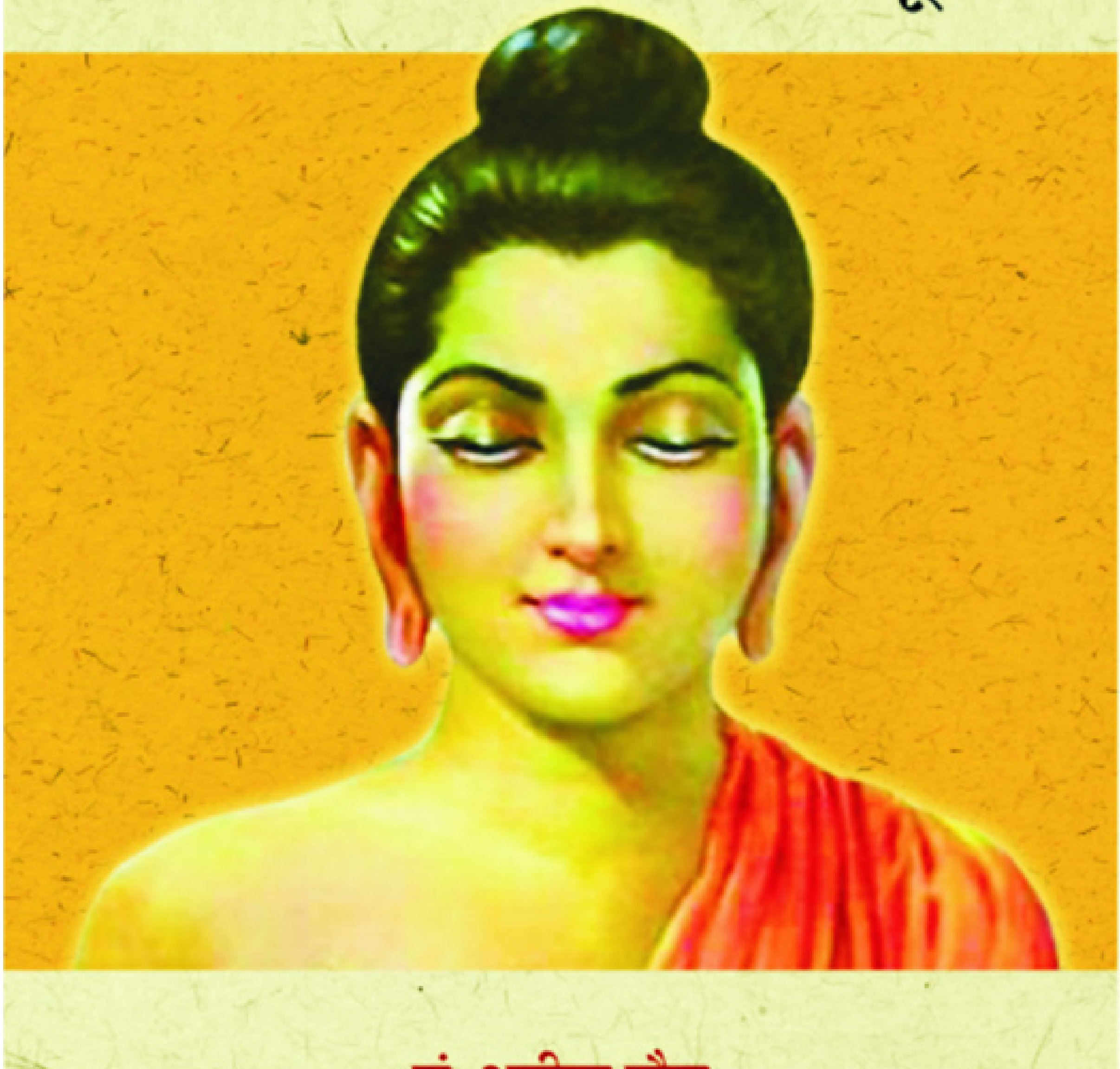

सं. अनीता गौड़

मैं बुद्ध बोल रहा हूँ

सं. अनीता गौड़

प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

जीवन परिचय

मैं बुद्ध बोल रहा हूँ

जीवन परिचय

गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले नेपाल के लुंबिनी वन में हुआ। उनकी माता कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी जब अपने माता-पिता के पास देवदह जा रही थीं, तो उन्होंने रास्ते में लुंबिनी वन में बुद्ध को जन्म दिया।

आज कपिलवस्तु और देवदह के बीच नौतनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिनदेई नामक स्थान के पास उस काल में लुंबिनी वन हुआ करता था।

उनका जन्म नाम सिद्धार्थ रखा गया। सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा थे और उनका सम्मान नेपाल ही नहीं समूचे भारत में था। सिद्धार्थ की मौसी गौतमी ने उनका लालन-पालन किया, क्योंकि सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी माँ का देहांत हो गया था। शाक्य वंश में जन्मे सिद्धार्थ का सोलह वर्ष की उम्र में दंडपाणि शाक्य की कन्या यशोधरा के साथ विवाह हुआ। यशोधरा से उनको एक पुत्र मिला, जिसका नाम राहुल रखा गया। बाद में यशोधरा और राहुल दोनों बुद्ध के भिक्षु हो गए थे।

विद्वानों ने महात्मा बुद्ध के बारे में शुद्धोदन को पहले ही सूचित कर दिया था कि यह बालक या तो चक्रवर्ती राजा होगा या विरक्त होकर संसार का कल्याण करेगा। पिता होने के नाते शुद्धोदन इस बात को लेकर चिंतित रहते थे। इस भविष्यवाणी को सुनकर राजा शुद्धोदन ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार सिद्धार्थ को दु:ख से दूर रखने की कोशिश की। फिर भी उनकी दृष्टि चार दृश्यों पर पड़ी—एक बूढ़े अपाहिज आदमी, एक बीमार आदमी, एक अंतिम संस्कार को ले जाती हुई लाश और एक साधु। इन चार दृश्यों को देखकर सिद्धार्थ समझ गए कि सबका जन्म होता है, सबका बुढ़ापा आता है, सबको बीमारी होती है और एक दिन सबकी मौत होती है। उन्होंने अपना धनवान जीवन, जाति, पत्नी, बंधु सबको छोड़कर साधु का जीवन अपनाने का निर्णय ले लिया। ताकि वे जन्म, बढ़ापे, दर्द, बीमारी और मौत के बारे में कोई उत्तर खोज पाएँ।

चूँकि बुद्ध का मन संसार से बिलकुल ही विरक्त रहता था, इसलिए अपने राजसुखों को त्यागकर तथा मानव जाति एवं जीव-जंतुओं के कल्याण हेतु छोटी अवस्था में ही वे एक दिन आधी रात को अपनी पत्नी व पुत्र को सोया छोड़कर, राजसी वेशभूषा त्यागकर अमरता की खोज में निकल पड़े।

बुद्ध को न तो स्वर्ग पाने की लालसा थी, न ही ऐश्वर्य सुख भोगने की कामना थी, क्योंकि उन्होंने इन सब चीजों पर विजय प्राप्त कर ली थी। सिद्धार्थ ने पाँच ब्राह्मणों के साथ अपने प्रश्नों के उत्तर ढूँढने शुरू किए। उन्होंने उचित ढंग से ध्यान करने की क्रिया सीखी, परंतु उन्हें उत्तर नहीं मिले। फिर उन्होंने तपस्या करने की कोशिश की। वे इस कार्य में भी अपने गुरुओं से भी ज्यादा प्रवीण निकले, परंतु उन्हें अपने प्रश्नों के उत्तर फिर भी नहीं मिले। फिर उन्होंने कुछ साथी इकट्ठे किए और अधिक कठोर तपस्या करने चल दिए।

ऐसा करते-करते उन्हें छह वर्ष बीत गए, इस बीच कितनी ही बार वे भूख के कारण मरते-मरते बचे, लेकिन अब तक उन्हें अपने प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाए थे। तब वे फिर कुछ और करने के बारे में सोचने लगे। इस समय, उन्हें अपने बचपन का एक पल याद आया, जब उनके पिता फसल बोने के लिए खेत तैयार करना शुरू कर रहे थे। उस समय की बात याद करके वे आनंद से भर गए और उसी आनंद में उनको ध्यान-समाधि लग गई, तब उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि समय स्थिर हो गया है। यही वह समय था, जब उनको बोधितत्व प्राप्त हुआ। इसके बाद कठोर तपस्या छोड़कर उन्होंने आर्य अष्टांग मार्ग ढूँढ निकाला, जो बीच का मार्ग भी कहलाया जाता है। उसके बाद वे लोगों को सद्मार्ग दिखाने के लिए चल पड़े।

सर्वप्रथम सारनाथ (वाराणसी के समीप) में उन्होंने पाँच भिक्षुओं के सामने धम्मचक्कपवनत्तनसुत (प्रथम उपदेश) दिया।

और कुशीनारा वह स्थान है, जहाँ भगवान् बुद्धदेव ने महापरिनिर्वाण ग्रहण किया।

महात्मा बुद्ध ने ईसा से छह सौ वर्ष पूर्व भारत में धर्म की स्थापना की थी। महात्मा बुद्ध धर्म का प्रवर्तन नहीं चाहते थे, बल्कि उसमें सुधार करना चाहते थे, क्योंकि वे कल्याण में विश्वास रखते थे। उनका धर्म तीन बातों की खोज में निहित है—

1. प्रथम, संसार में अशुभ है।
2. द्वितीय, इस अशुभ का क्या कारण है? उन्होंने बताया कि यह मनुष्य की दूसरों से ऊँचे चढ़ जाने की इच्छा में है। यह वह मनुष्य दोष है, जिसका निवारण निस्वार्थता से किया जा सकता है।
3. तीसरे, इस अशुभ का इलाज निस्स्वार्थ बनकर किया जा सकता है।

महात्मा बुद्ध ने कहा कि कभी भी बल से किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है, यही आधार ही भगवान् बुद्ध के धर्म का मुख्य आधार था। महात्मा बुद्ध समता

के महान् उपदेष्टा थे।

उनका कहना था कि आध्यात्मिकता प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक स्त्री-पुरुष को है। मानव की समता उनके महान् संदेशों में से एक है।

उनका धर्म-सिद्धांत यह था कि मनुष्य दु:ख इसलिए भोगता है कि वह मात्र स्वार्थी है। भगवान् बुद्ध ने कहा है कि समस्त प्राणियों के कर्म दस बुराइयों में ही निहित हैं। अगर इनसे बचा जाए तो सबकुछ ठीक हो जाएगा।

हत्या, चोरी तथा व्यभिचार ये तीनों बुराइयाँ शरीर की बुराइयाँ हैं। झूठ बोलना, गाली देना, बकवास करना तथा निंदा करना ये चार बुराइयाँ जीवन की हैं। लालच, द्वेष तथा त्रुटि ये तीन मन की बुराइयाँ हैं। अगर इन दसों बुराइयों से मनुष्य बच जाए तो वह सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हो जाता।

भगवान् बुद्ध के उपदेश

हिंदू-धर्म में वेदों का जो स्थान है, बौद्ध धर्म में वही स्थान पिटकों का है। भगवान् बुद्ध ने अपने हाथ से कुछ नहीं लिखा था। उनके उपदेशों को उनके शिष्यों ने पहले कंठस्थ किया, फिर लिख लिया। वे उन्हें पेटियों में रखते थे। इसी से 'पिटक' नाम पड़ा। पिटक तीन हैं—

1. **विनय पिटक**— इसमें विस्तार से वे नियम दिए गए हैं, जो भिक्षु-संघ के लिए बनाए गए थे। इनमें बताया गया है कि भिक्षुओं और भिक्षुणियों को प्रतिदिन के जीवन में किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए।
2. **सुत्त पिटक**— सबसे महत्त्वपूर्ण पिटक सुत्त पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के सभी मुख्य सिद्धांत स्पष्ट करके समझाए गए हैं। सुत्त पिटक पाँच निकायों में बँटा है—
    1. दीघ निकाय,
    2. मज्झिम निकाय,
    3. संयुत्त निकाय,
    4. अंगुत्तर निकाय और
    5. खुद्दक निकाय।

   खुद्दक निकाय सबसे छोटा है। इसके 15 अंग हैं। इसी का एक अंग 'धम्मपद' है। एक अंग 'सुत्त निपात' है।

3. **अभिधम्म पिटक**— अभिधम्म पिटक में धर्म और उसके क्रियाकलापों की व्याख्या शास्त्रसम्मत ढंग से की गई है। वेदों में जिस तरह ब्राह्मण-ग्रंथ हैं, उसी तरह पिटकों में अभिधम्म पिटक हैं।

धम्मपद

हिंदू-धर्म में गीता का जो स्थान है, बौद्ध धर्म में वही स्थान धम्मपद का है। गीता जिस प्रकार महाभारत का एक अंश है, उसी तरह धम्मपद सुत्त पिटक के खुद्दक निकाय का एक अंश है।

धम्मपद में 26 वग्ग और 423 श्लोक हैं। बौद्ध धर्म को समझने के लिए अकेला धम्मपद ही काफी है। मनुष्य को अंधकार से प्रकाश में ले जाने के लिए यह प्रकाशमान दीपक है। यह सुत्त पिटक के सबसे छोटे निकाय खुद्दक निकाय के 15 अंगों में से एक है।

त्रिपिटक में मुख्यतया भगवान् बुद्ध की धर्मवाणी संग्रहीत है, जो साधारणतया मानव मात्र के लिए और विशेषतया विपश्यी साधकों के लिए प्रभूत पावन प्रेरणा और महामांगलिक मार्गदर्शन लिये हुए है। संपूर्ण त्रिपिटक में 84,000 धर्म शिक्षापद (धर्म स्कंध) हैं, जिनमें 82,000 भगवान् बुद्ध के और 2,000 उन भिक्षुओं के हैं, जो भगवान् के परम शिष्य थे।

भगवान् के जीवनकाल में समग्र बुद्धवाणी इन नौ भागों में विभाजित की गई थी—सुत्तं, गेय्यं, वैय्याकरणं, गाथा, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं और वेदल्लं। संभवतः इन्हीं को भगवान् ने धम्म, विनय और मातिका कहा और आगे चलकर संभवतः ये ही सुत्तपिटक, विनयपिटक और अभिधम्मपिटक के नाम से संपादित एवं संग्रहीत हुए।

धर्मवाणी को इन तीन विभागों में पालकर, सँभालकर रखनेवाला संपूर्ण साहित्य ही त्रिपिटक कहलाया। यह साहित्य तत्कालीन उत्तर भारत की प्राकृतिक जनभाषा में है। इस भाषा ने इसे पालकर, सँभालकर रखा, अतः वह पालि कहलाई। ये दोनों मिलकर त्रिपिटक-पालि कहलाए।

॥ ओम्मणि पदमे हूम्॥ यह षडाक्षरीय मंत्र है, जिसका उल्लेख अवलोकितेश्वरा में किया गया है। यह मंत्र सभी प्रकार के खतरों से सुरक्षा के लिए जपा जाता है। बताया जाता है कि जो कोई इस मंत्र को जपता है वह सब खतरों से सुरक्षित हो जाता है। इस मंत्र का जप बौद्ध धर्म की महायान शाखा में प्रमुख रूप से किया जाता है।

यह मंत्र अकसर प्रार्थना चक्र, स्तूपों की दीवार, धर्मस्थानों के पत्थरों, मणियों आदि में खुदा हुआ या चित्रित रूप में मिल जाता है। जिस प्रार्थना चक्र पर यह मंत्र खुदा होता है उसको एक बार घुमाने पर माना जाता है कि उसने इस मंत्र को दस लाख बार जपा है। यह मंत्र अँगूठी या अन्य आभूषणों में भी मुद्रित रहता है।

पारंपरिक मंडल

मंडल यानी ऐसा तांत्रिक यंत्र, जो गोलाकार होता है। यह ध्यान का यंत्र माना जाता है। यह दृश्य रूप से ध्यान और मनन करने में सहायता करता है। इसके इस्तेमाल से भक्तजनों को सिद्धि की प्राप्ति होती है।

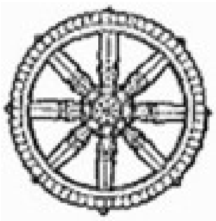

इसके कई प्रकार होते हैं। इनमें से सबसे प्रचलित 'ध्यानी बुद्ध' का मंडल है। यह सबसे प्राचीन तांत्रिक यंत्र है। इसे शुद्धिकरण का महल कहा जाता है। यह एक जादुई चौकोर होता है जो कि अध्यात्म की राह में आनेवाले अवरोधों को हटाकर चित्त का शुद्धिकरण करता है।

ध्यान चक्र

यह केवल तिब्बती बौद्ध भक्तों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। इसमें 'ओम्मणि पदमे हूम्' मंत्र खुदा होता है। प्रार्थना चक्र, जो छोटे आकार के होते हैं, वे आम लोगों और प्रवासियों द्वारा इस्तेमाल में लाए जाते हैं। बड़े आकार के चक्र मठों, स्तूपों में इस्तेमाल होते हैं।

बौद्ध धर्म के आठ शुभ चिह्न निम्न हैं—

(1) श्वेत शंख

श्वेत शंख जो दाहिनी ओर कुंडलित हो, धर्म की मधुर, गहरी और संगीतमय शिक्षा को दरशाता है। यह हर प्रकार के व्यवहारवाले शिष्यों के लिए उपयुक्त है। यह शंख उनको अज्ञानता से उठाकर अच्छे कर्म और दूसरों की भलाई करने की प्रेरणा देता है।

(2) विजयी ध्वज

विजयी ध्वज जीवन में शारीरिक, मानसिक और अन्य गतिरोधों के विरुद्ध पाई गई विजय का प्रतीक है। यह बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की विजय का भी प्रतीक है।

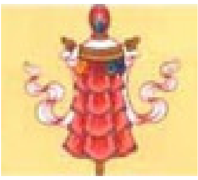

(3) स्वर्ण मछली

स्वर्ण मछली सभी जीवों के निर्भय जीवन जीने का प्रतीक है। जैसे मछली निश्चिंत होकर तैरती है, वैसे ही सभी जीवों को निर्भय होकर जीना चाहिए।

(4) पवित्र छत्री

पवित्र छत्री मनुष्यों को बीमारी, विपत्ति और सभी विनाशी ताकतों से सुरक्षित रखने का प्रतीक है। यह तेज धूप से छाया का आनंद लेने का भी प्रतीक है।

(5) धर्मचक्र

यह बौद्ध धर्म के सभी प्रकार के सिद्धांतों, जिनका कि भगवान् बुद्ध ने अपने उपदेशों में उल्लेख किया है, का प्रतीक है। यह निरंतर विकास की ओर इंगित करता है।

(6) शुभ आकृति